क्या आप इस महापुरुष को जानते हैं ?

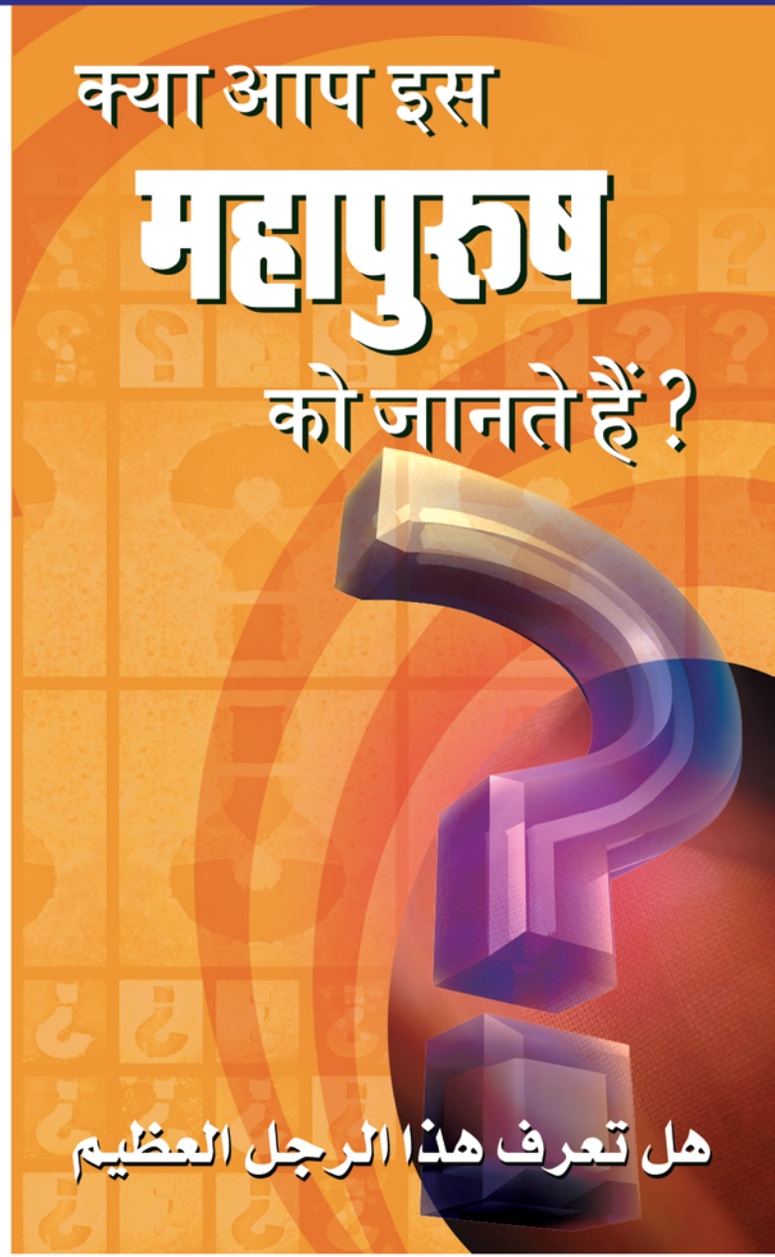

IPC
لجنة التعريف بالإسلام
ISLAM PRESENTATION COMMITTEE
جمعية النجاة الخيرية

मुहम्मद सल्ल० का वर्णन मिलता है। नराशंस शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है, नर का अर्थ होता है ''मनुष्य'' और आशंस का अर्थ होता है ''प्रशंसित'' अर्थात मनुष्यों द्वारा प्रशंसित, और मुहम्मद का अर्थ भी ''प्रशंसित मनुष्य'' होता है।

''मुहम्मद'' तथा ''अहमद'' का उल्लेख

- भविष्य पुराण (323/ 5/ 8) में है -

  ''एक दूसरे देश में एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आयेगा उनका नाम ''महामद'' होगा वे रेगिस्तानी क्षेत्र में आयेंगे'

- और यजुर्वेद (18/ 31) में है

  वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्तयवर्ण तमसः प्रस्तावयनाय

  वेद ''अहमद'' महान व्यक्ति हैं, सूर्य के समान अंधेरे को समाप्त करने वाले, उन्हीं को जान कर प्रलोक में सफल हुआ जा सकता है, उसके अतिरिक्त सफलता तक पहुंचने का कोई दूसरा मार्ग नहीं ।

जन्म तिथि का उल्लेख

कल्कि पुराण (2/15) में अन्तिम संदेष्टा के जन्म तिथि का भी उल्लेख किया गया है

''जिसके जन्म लेने से दुखी मानवता का कल्याण होगा, उसका जन्म मधुमास के शम्भल पक्ष और रबी फसल में चन्द्रमा की 12वी तिथि को होगा''।

मुहम्मद सल्ल० का जन्म भी 12रबीउल-अव्वल को हुआ रबीउल-अव्वल का अर्थ होता है मधुमास के हर्षोल्लास का महीना।

जन्म-भूमि तथा माता पिता का उल्लेख

श्रीमद-भगवद महापुराण (12/2/18) में कल्कि अवतार की जन्मभूमि ''शम्भल'' बताया गया है, ''शम्भल'' का शाब्दिक अर्थ है ''शान्ति का स्थान'' और मक्का जहाँ मुहम्मद सल्ल० पैदा हुए उसे अरबी में ''दारुल अम्न'' कहा जाता है जिसका अर्थ ''शान्ति का घर'' है।

''विष्णुयश'' कल्कि के पिता का नाम बताया गया है और मुहम्मद सल्ल० के पिता का नाम ''अब्दुल्लाह'' था और जो अर्थ ''विष्णुयश'' का होता है वही ''अब्दुल्लाह'' का होता है ''विष्णु'' यानी ''अल्लाह'' और ''यश'' यानी ''बन्दा'' अर्थात ''अल्लाह का बन्दा'' (अब्दुल्लाह)।

उसी प्रकार कल्कि की माँ का नाम 'सुमति'(सोमवती) आया है जिसका अर्थ होता है ''शान्ति एवं मननशील स्वभाव वाली'' और मुहम्मद सल्ल० की माता का नाम भी ''आमना'' था जिसका अर्थ है '' शान्ति वाली ''।

डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी पुस्तक *'कल्कि अवतार और मुहम्मद सल्ल०'* में कल्कि तथा मुहम्मद सल्ल० की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए बताया है कि आज हिन्दु भाई जिस कल्कि अवतार की प्रतीक्षा कर रहे हैं वह आ चुके और वही मुहम्मद सल्ल० हैं ।

मुहम्मद सल्ल०सब के लिए

मुहम्मद सल्ल० ने जो संदेश मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत किया उसमें समस्त संसार का कल्याण है क्योंकि आप कल्कि अवतार हैं आपके बाद किसी संदेष्टा अथवा प्राफ़ेट के आने की आवश्यकता नहीं इसी लिए क़ुरआन ने आपको ''सम्पूर्ण संसार के लिए दयालुता''(सूरः21: आयत107) की उपाधि दी है। इस का स्पष्टिकरण निम्नलिखित तथ्यों से होता है

(१) मुहम्मद सल्ल० की दृष्टि में सारे इनसान समान थे। धनवान निर्धन, अमीर ग़रीब और काले गोरे सब को एक ही मानव जाति का अंग समझा और हर प्रकार के भेद-भाव तथा जातिवाद का खंडन किया।

(२) आपने मात्र एक ईश्वर की उपासना की ओर इंसानों को बुलाया जो ईश्वर प्रत्येक इंसानों का रचयिता और पालनकर्ता है।

(३) आपने ऐसा सिद्धान्त पेश किया जिसमें मानव-जाति की सारी समस्याओं का समाधान है। आपकी शिक्षायें जीवन के सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक,नैतिक और आध्यात्मिक प्रत्येक पहलुओं पर हावी हैं।

(४) मुहम्मद सल्ल० ने जो सिद्धान्त पेश किया उसके आधार पर हर युग में एक शान्ति पूर्ण समाज की स्थापना की जा सकता है

IPB
دار التعريف بالإسلام
Islam Presentation
Bookshop
للمساهمة معنا في مشروع طباعة الكتب
www.ipc-kw.com
104 داخلي 2444117 - 2427383
Fahad Salem St. Al-Mulla Saleh Mosque P.O.Box:1613 Safat 13017
Tel.: 2444117 - Fax: 2400057 e-mail:ipb@ipc-kw.com

ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त दयावान और कृपाशील है

आप इतिहास के एक मात्र व्यक्ति हैं जो अन्तिम सीमा तक सफल रहे,धार्मिक स्तर पर भी और सांसारिक स्तर पर भी।(Dr. Michael H.Hart,The 100, New York 1978)

यह टिप्पणी एक इसाई वैज्ञानिक की है जिसने अपनी पुस्तक The 100 (एक सौ) में मानव इतिहास पर प्रभाव डालने वाले संसार के सौ अत्यन्त महान विभूतियों का वर्णन करते हुए प्रथम स्थान पर ऐसे महापुरुष को रखा है जिनका वह अनुयाई नहीं। जानते हैं वह महापुरुष कौन हैं?

''उनका नाम मुहम्मद है''

यह वह इन्सान हैं जिनके समान धरती पर कोई पैदा नहीं हुआ, 23 वर्ष की अवधि में पूरे अरब को बदल कर रख दिया, प्रोफेसर रामाकृष्णा राव के शब्दों में -

आप के द्वारा एक ऐसे नए राज्य की स्थापना हुई जो मराकश से लेकर इंडीज़ तक फैला और जिसने तीन महाद्वीपों -एशिया,अफ्रीक़ा और यूरोप- के विचार और जीवन पर अपना असर डाला।

(इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद,प्रोफेसर रामाकृष्णा राव पृष्ठ ३)

मुहम्मद स० 20 अप्रैल 571 ई० में अरब के मक्का शहर के एक प्रतिष्ठित वंश में पैदा हुए। जन्म के पूर्व ही आपके पिता का देहांत हो गया। छः वर्ष की आयु हुई तो माता भी चल बसीं और आठ वर्ष के हुए तो दादा का साया भी सर से उठ गया जिसके कारण कुछ भी पढ़ लिख न सके। आरम्भ ही से गंभीर, सदाचारी, एकांत प्रिय तथा पवित्र एवं शुद्ध आचरण के थे। अरबों ने आपको ''सत्यवादी'' तथा ''अमानतदार'' की उपाधि दे रखी थी। आपकी जीवनी बाल्यावस्था हो या किशोरावस्था हर प्रकार के दाग़ से शुद्ध एवं उज्जवल थी।
चालीस वर्ष की आयु में आप पर आकाशीय-दूत जिब्रील अ० के माध्यम से क़ुरआन के रूप में ईश्वरीय संदेश उतरा। अपनी जाति वालों के पास आए और उन से कहा-

''हे लोगो! एक ईश्वर की पूजा करो सफल हो जाओगे''

जाति वालों में मूर्तिपूजा का प्रचलन था। काबा में 360 मूर्तियां रखी गई थीं। समाज वाले उनके शत्रु हो गए, गालियां दी, पत्थर मारा,रास्ते में कांटे बिछाए, उन पर ईमान लाने वालों को एक दिन और दो दिन नहीं बल्कि निरंतर 13वर्ष तक भयानक यातनायें दी, यहां तक कि उन्हें जन्मभूमि से भी निकाला, मदीना में शरण लिया फिर भी शत्रुओं की शत्रुता में कमी न आई। आठ वर्ष तक उनके विरोध लड़ाई ठाने रहे, परन्तु उन्होंने उन सब कष्टों को सहन किया। हालांकि जाति वाले उन्हें अपना सम्राट बना लेने और धन के ढ़ेर उनके चरणों में डालने के लिए तैयार थे, शर्त यह थी कि वह लोगों को एक ईश्वर की ओर बुलाना छोड़ दें।

फिर एक दिन वह भी आया कि आप अपने जन्म-भूमि मक्का पर विजय पा चुके थे,प्रत्येक विरोधी और शत्रु आपके क़ब्ज़ा में थे, यदि आप चाहते तो हर एक से एक एक कर के बदला ले सकते थे परन्तु आप ने सभी लोगों की क्षमा का एलान कर दिया, जिसका समाज पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मक्का विजय के समय आपके अनुयाइयों की संख्या दस हज़ार थी जबकि दो वर्ष के पश्चात अन्तिम हज्ज के अवसर पर डेढ़ लाख हो गई। इसका कारण क्या था? गांधी जी के शब्दों में -

''अब मुझे पहले से भी ज़्यादा विश्वास हो गया है कि यह तलवार की शक्ति न थी जिसने इस्लाम के लिए विश्व क्षेत्र में विजय प्राप्त की,बल्कि यह इस्लाम के पैग़म्बर का अत्यन्त सादा जीवन,आपकी निःस्वार्थता, प्रतिज्ञा-पालन और निर्भयता थी।'' (जगत महर्षि पृष्ठ 2)

मुहम्मद सल्ल० की चमत्कारियां

मानव पथभ्रष्टता का मूल कारण महापुरुषों की चमत्कारियां हैं लोगों ने गुरूओं के अन्दर विभिन्न प्रकार की चमत्कारियों को देखकर उन्हें ईश्वर का अवतार मान लिया और उनकी पूजा शुरू कर दी। किंतु मुहम्मद सल्ल० उन सब से सर्वथा भिन्न हैं ज़रा उनकी कुछ चमत्कारियों का अवलोकन कीजिए

(१)मक्का वालों ने आपके पैग़म्बर होने का प्रमाण मांगा तो आप के एक इशारे पर चांद के दो टुकड़े हो गये जिस का समर्थन आधुनिक विज्ञान ने भी किया है। (विस्तार के लिए देखिए, क्या यह ग्रन्थ मानव रचित है? पृष्ठ 16)

(२)हुदैबिया की सन्धि के अवसर पर अंगुलियों से पानी निकला और 1400 व्यक्तियों ने प्यास बुझाई ।

(३)आप का सब से बड़ा चमत्कार दिव्य क़ुरआन है क्योंकि ऐसा व्यक्ति जिसे न पढ़ना आता है न लिखना, न ही उसका कोई गुरू है ऐसी अद्भुत वाणी पैश कर रहा है जो चुनौती भी दे रही है कि मनुष्य या प्रेतों में कोई ऐसा है जो उसके समान एक सूरः ही पेश कर दे (सूरः बक़रः 23) परन्तु इतिहास साक्षी है कि वह अरब विद्वान जिनको अपने भाषा सौन्दर्य पर गर्व था, अपनी भाषा के सामने दूसरों को गूंगा समझते थे उसके समान एक टुकड़ा भी पेश न कर सके और क़ुरआन आज तक संसार वालों के लिए चुनौती बना हुआ है।

प्रिय भाई!. इन स्पष्ट चमत्कारियों के होते हुए क्या मुहम्मद सल्ल० का हक़ नहीं था कि उनकी पूजा की जाए? या वह अपने पूज्य होने का दावा करें? यदि वह ऐसा दावा करते तो वह संसार जिसने राम को ईश्वर बना डाला, जिसने कृष्ण जी को भगवान कहने से संकोच न किया, जिसने महात्मा बुद्ध को स्वयं पूज्य बना लिया, जिसने ईसा अ० को ईश्वर का बेटा मान लिया वह ऐसे महान व्यक्ति को ईश्वर मानने से कभी संकोच न करता, लेकिन वह ऐसा कैसे कह सकते थे जबकि वह सत्य संदेश लेकर आए थे, वह तो स्वयं को केवल एक मानव के रूप में प्रकट करते हैं और कहते हैं -

'' मैं एक मानव मात्र हूं, तुम्हीं जैसा ''।

आज यदि कोई मुस्लिम मुहम्मद सल्ल० की पूजा करने लगे तो वह इस्लाम की सीमा से निकल जाएगा।

मुहम्मद सल्ल० और अन्य धार्मिक ग्रन्थ

मुहम्मद सल्ल० वह अन्तिम संदेष्टा हैं जिनके आगमन की भविष्यवाणी उनसे पूर्व प्रत्येक धार्मिक ग्रन्थों ने की है।

महात्मा बुद्ध की भविष्यवाणीः महात्मा बुद्ध ने मरते समय अपने शिष्य नन्दा को कान में ''मैत्रेय'' के नाम से बुद्ध के आने की सूचना दी जिसका अर्थ '' मुहम्मद '' होता है।

नराशंस और मुहम्मद : वेदों में ''नराशंस'' के नाम से 31 स्थान पर और पुराणों में ''कल्कि-अवतार'' के नाम से